Example Method

1- मस्तक -
- भाग्य का प्रतीक
- तिलक लगाने का स्थान
- सबसे ऊपर

1- हमारा जीवन इतना श्रेष्ठ बने कि भाग्य का प्रतीक माना जाने लगे जैसे राजा के घर में बच्चा पैदा होते ही भाग्यशाली कहलाने लगता है, हम भी अपने को ज्ञान लेते ही श्रेष्ठ जीवन के नशे का अनुभव करें। **Ordinary जीवन नहीं है।**

2- जैसे हमारे पर लोगों की नजर पड़े तो देह भान से थोड़ा ऊपर उठकर लोगों को महानता की feeling हो।

3- कलियुग के धनचक्र से थोड़ा अलग रहेंगे तो समाज से थोड़ा ऊपर ही रहेंगे।

2- नयन -
- यथार्थ जानकारी
- कृपा-दृष्टि
- अभिव्यक्ति
- खामोश आवाज

1- हमें देखकर लोगों को घर जाने या परमात्म को याद करने की स्मृति आ जाये, या समय कैसा चल रहा है दिखने लगे। आने वाले समय एवं अगले जन्म स्वर्ग में आने के लिए भी पुरुषार्थ की लगन जागृत हो जाये।

2- जिस पर भी नजर पड़े अर्थात् सम्पर्क हो तो कृपा रहम की नजर-ए-इनायत ही हो उन्हें कुछ प्राप्ति हो।

3- अन्दर की भावना सानिध्य से समझा सके, कठिन से कठिन धारणा इशारों में व्यक्त कर सकें।

4- बिना वाणी के आंखें बहुत कुछ बोल देती हैं इसी प्रकार हमारे नयन मार्ग दर्शक या संदेश बन जायें।

3- मुख - मुंह में कोई भी चीज जाती है तो सारे शरीर को बांट

देता है अपने पास नहीं रखता, इसी प्रकार जो भी बाबा से या परिवार से मिला है उसे तुरन्त सबको बांटना है। कोई भी सफलता सामूहिक प्रयास का ही Result होती है इसलिए सबका बराबर का अधिकार है।

2- दो काम एक करता है — बोलने का और खाने का भी। इसी प्रकार बाबा ने कहा है कि वाणी के साथ मेंशा समाशा का भी अर्थ करते चलो। कर्मणा सेवा के सर्व गुणों का भी दान करते रहें या प्रेरणा तो दे ही।

3- समीपता - कभी भी संबधों में कुछ खटास आ जाती है तो बात-चीत से वह से वही समस्या सुलझ जाती है। तो इसी प्रकार कभी नाराज होकर बात नहीं बंद करनी चाहिए बल्कि बात करके नाराजगी खत्म करनी चाहिए, दूसरा ऐसी बात नहीं करनी चाहिए कि सामने वाला बात करना बंद कर दे। आपस में समीपता के लिए बातचीत जरूरी है

4- हाथ - सहयोग
रास्ता बताने
कर्म + ध्यान
आशीर्वाद

1- हाथ सहयोग के काम आते हैं इसलिए हमेशा हाथ बढ़ाने या देने की बात करते हैं। इसी प्रकार बाबा का Right hand बनकर नव निर्माण के काम को आगे बढ़ाने का ही सहयोग देना है।

2- रास्ता बताना - हाथ रास्ता बताने के भी काम आते है इसी प्रकार हम कोई भी काम करे कहीं भी हो पर हमारा काम परमधाम का एवं स्वर्ग का रास्ता बताने का ही Aim होना चाहिए।

3- भाग्य बनाने एवं कर्म का प्रतीक-
हाथ द्वारा ही कार्य करके भाग्य का निर्माण किया जाता है। इसीप्रकार हमारा हरकर्म श्रेष्ठभाग्य का निर्माण करे। कर्म के आधार पर भाग्य निर्भर है इसीतरह मेरा हर कर्म दूसरों का भाग्य बनाता जाये। अर्थात कुछ न कुछ लोगों को प्रेरणा या प्राप्ति भाग्य बनाने की अवश्य प्राप्त हो।

4- आशीर्वाद-
हाथ से आशीर्वाद और वरदान भी दिये जाते है, बाबा हमें अपने Right hand की तरह किसी को वरदान व आशीर्वाद देने की तरह भी Use करे, अथवा हमारी कोई भी Act आशीर्वाद व वरदान अवश्य बने।

5- चरण कमल - गति प्रदान करना
मंजिल प्राप्त करने के लिए चढ़ना
डांस करना.

1- हमारे जीवन व कर्म-वाणी या संकल्प से न सिर्फ स्वयं में गति तीव्र हो बल्कि अनेकों में भी तीव्रता आ जाये। ज्ञान में वैसे कब से और कब तक चलेंगे अब इतना कम समय बचा है जो चलने से तो संभव नहीं हो दौड़ना या Jump तो लगाना ही चाहिए। वामन की तरह तीन कदम में तीन लोकों पर कदम हो।

2- मंजिल जब ऊंचाई पर हो तो सब जगह तो lift तो नहीं होती चढ़ना ही पड़ता है, तो भले हमें थोड़ा परिश्रम करने पड़े, पर संसार की ओर तो नहीं जाना है भले धारा से अलग चलना है पर चढ़ना ही है।

3- Dance करना- पैरों के बिना हमारे मन को डांस को

देखें भले ही कि हम Dance कर रहे हैं पर मन के अंदर में न तो हमें थकावट होती है न ही संसार में उपहास के पात्र बनेंगे अगर ठीक से अर्थात Perfect नहीं हुआ तो, दूसरा कर्म भी खुशी में Dance की तरह ही हो जायें जिससे लोगों को भी खुशी प्रदान हो और हमें भी थकावट न हो।

6- वृक्ष — जीवन परमार्थ के लिए
फलीभूत होने पर झुकना
धरती से जीवन भर का साथ
हर चीज उपयोगी

1- हमारा जीवन हो ही परमार्थ के लिए, परमार्थ में स्वकल्याण तो हो ही जायेगा, इसलिए ध्येय सिर्फ परमार्थ हो।

2- चाहें जिस भी तरह से संपन्न हों या हो जाये पर नम्रता के साथ विनम्रता अवश्य पोशाक की तरह व्यक्तित्व में रहे, अहं की अकड़ नहीं हो। ~~जगदीश भाई जी कहते~~

3- जिसने जीवन दिया या जिससे जीवन हो उसके साथ सदा जुड़े रहें, जगदीश भाई जी कहते थे जिस सेन्टर से ज्ञान लिया, पालना ली, शिक्षा ली, जिनकी सेवा के कारण आज हम यहां तक पहुंचे हैं और आज हम कितने भी अच्छे व श्रेष्ठ भाषण करने वाले व सेवायें करने वाले बन जायें पर उनका उपकार कभी न भूलें, अगर तन से नहीं तो मन से साथ अवश्य रहें।

4- हर चीज उपयोगी —
हमारा कुछ भी व्यर्थ न हो, हमारे एक एक संकल्प या बोल या कर्म का मतलब होना चाहिए

Date :

हमारा ये जीवन बड़े भाग्य से मिला है हीरे तुल्य है, बाबा ने बहुत मेहनत व समय लगाया है और इसे व्यर्थ गवांने मे ठीक नहीं, इसलिए हर Act पर Attention हो, जिससे सफल होता रहे।

7- भोग - भगवान एवं ईष्ट के लिए
शुद्धता एवं श्रेष्ठता
बांट कर
परसाद याद व अनासक्त भाव

1- भोग कहा ही उसे जाता है जिसे परमात्मा के लिए ही बनाया जाये या पहले उसे अर्पित किया जाये तो ऐसे मेरा ये अलौकिक जीवन है ही प्रभु के लिए व इसे जैसे व जहाँ चाहे Use करे। दूसरा अगर अपने लिए भी कुछ करना है तो भी पहले उसे समर्पित या आज्ञा लेने के बाद ही करनी है।

2- शुद्धता एवं श्रेष्ठता -
भोग मैं हरेक प्रकार की शुद्धता अवश्य रखी जाती है, जहां बनता है, जो बनाता है और जिसमें बनाया जायेगा और जिसे बनाया जाता है इसी प्रकार श्रेष्ठता अर्थात अच्छे से अच्छी चीज ईष्ट को अर्पित की जाती है हमें भी अपनी जीवन को अन्दर बाहर कोई भी अर्थात हर प्रकार से शुद्ध अर्थात स्वच्छ व पवित्र करके चाहे मन चाहे तन चाहे वस्त्र चाहे स्थान हर चीज शुद्ध रखना चाहिए तभी बाबा को स्वीकार कराने योग्य हो सकता है। दूसरा भगवान के भोग में अच्छे से अच्छा भोग लगाया जाता है तो हमारी हर चीज अच्छे से अच्छी हो चाहे मन्सा - वाचा - कर्मणा व चलन, पहनना, रहन

Date :

सहज इतनी श्रेष्ठ हो कि भगवान के अर्पण योग्य ही समझा जाये।

3- बाँट कर खाना-

भोग व प्रसाद कभी भी चाहे थोड़ा ही क्यों न हो पर बाँट कर ही खाया जाता है। इसी प्रकार हमारी कोई भी चीज चाहे व जन्म से हो या प्रभु प्रदत्त है तो भी अब वह सभी के लिए हो है अपने लिए कुछ भी नहीं यह जीवन परमात्म सेवार्थ है तो सारे संसार के लिए ही है।

4- अनासक्त व परमात्म याद के साथ

कभी भी देखो जब भी कोई भोग खाते है तो जिस भी इष्ट का होगा उसका नाम लेकर मस्तक से लगाकर फिर स्वाद से परे हो कर खाते हैं इसलिए उसको प्रसाद भी कहते हैं। अर्थात स्वाद से ऊपर परमात्म याद में अनासक्त हो कर खाते है, इसीप्रकार हमें भी हर कार्य परमात्म याद के साथ व अनासक्त होकर करना है जीवन को भी किसी स्वार्थ वश नहीं अनासक्त होकर जीना है

2- अर्जुन -

एक पहचान
हर बात प्रभु से
एक ~~घर~~ ही लक्ष्य
बड़ों के प्रति अगाध श्रद्धा

1- रंग भूमि में जब अर्जुन से उसका परिचय पूछा जाता है तब वह सिर्फ द्रोण शिष्य अर्जुन बताता है तब उसे कहा जाता क्या तुम्हारा कोई और परिचय नहीं तो वह कहता है नहीं, परिचय हमेशा एक ही होना चाहिए। इसी प्रकार हम कहीं भी रहें व कोई भी कार्य करें पर हमारी पहचान

एक ही होनी चाहिए कि हम आत्मा है और परमात्मा की संतान हैं। बस पहचान दूसरी और नहीं।

2- हर बात प्रभु मत से,

अर्जुन का कोई कार्य बिना परमात्म आज्ञा के नहीं व साथ भी प्रभु का, इसी प्रकार हमारी बात श्रीमत के अनुसार ही हो, सदा साथ प्रभु का हो, पास किसी के रहें पर साथ प्रभु का ही हो।

3- एक ही लक्ष्य -

जब गुरु ने चिड़िया की आंख पर निशाना लगाने के लिए कहा तो ~~सिर्फ~~ अर्जुन को सिर्फ चिड़िया की आंख का बिन्दु ही दिख रहा था इसी प्रकार, हम कहीं भी रहें व कुछ भी करें पर नजर बिन्दु बाप पर ही एकाग्र हो, ~~~~ । सतत अभ्यास किया।

4 - गुरु व बड़ों के प्रति अगाध श्रद्धा

अर्जुन का अपने गुरु व भीष्म पितामह से अगाध प्रेम दिखाते हैं। हमें भी अपने बड़ों व सद्गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा होनी ही चाहिए। बाबा की किसी भी बात में रिंचक संशय नहीं, बड़ी दादी कहती थी तुम यहां पढ़ने आये हो तो बस पढ़ो, बड़े क्या कर रहे हैं उनको क्या कर रही है इसमें बुद्धि न लगाओ, किसी भी तरह कचरा बुद्धि में डालोगे तो ज्ञानामृत नहीं ठहरेगा।

9- हंस - स्वच्छ

परख शक्ति + निर्णय शक्ति से संपन्न

राजहंस

श्वेत

1- ~~स्वच्छ~~ - हंस भले पानी में रहता है पर हमेशा ही

स्वच्छता का ध्यान रखता है, ऐसे हम भी भले संसार में रहें पर जिन चीजों की हमें आवश्यकता नहीं वह दुनियादारी अन्दर न जमा करें, मन में व्यर्थ का कचरा रखने से बदबू व कीटाणु ही पैदा होंगे। सदा अपने को Safe रखें।

2. परखशक्ति व निर्णय शक्ति -

हंस के लिए कहा जाता है कि क्षीर से नीर निकाल देता है कंकड़ के बीच से मोती ही चुगता है, हमें भी अपने विवेक को जागृत रखकर कर्मक्षेत्र पर कर्म के बीज बोने हैं जैसे होली चौराहे पर जलाई जाती है उसी प्रकार संगम युग में आने के बाद भी चार रास्ते होते हैं, पुरुषार्थ शुरू करने के बाद भी कई रास्ते होते हैं हमें अपनी निर्णय शक्ति को उपयोग में लाकर पथ निश्चित करना है।

3- राजहंस -

सिर्फ यही एक पक्षी है जिसे राज शब्द की उपाधि मिलती है इसी प्रकार हर ब्राह्मण राजयोग सीख राजा बन सकता है या बाबा कहते मेरा हर बच्चा राजा बच्चा है तो किसी भी प्रकार की अधीनता में क्यों रहें, ~~स्व~~ स्वराज्य का तिलक बाबा देते हैं तो फिर प्रजा की तरह क्यों दासता के संस्कारों को पालते रहना।

4- श्वेत रंग -

हंस अपने श्वेत पंखों को तो बड़े सहेज कर रखता किसी भी कीचड़ के दाग नहीं लगाता तो जब हमने पवित्रता का बीड़ा उठा ही लिया न सिर्फ स्वयं बल्कि युग को भी प्रकृति को पावन बनाने के कार्य में सहयोगी बने ही हैं तो किसी भी प्रकार की गंदगी को दिल

या मन में रक्त-चरित्र की गंदगी से दूषित क्यों करें।
श्वेत वस्त्र पहनना अच्छा लगता है पर Care भी
बहुत करना पड़ता है।

10- सूर्य -

प्रकाश - रोशनी देना
किचड़े व कीड़ों को भस्म करना
उर्जा + गर्मी देना
कभी भी बादल छिपा नहीं सकते।

1- प्रकाश -

सूर्य प्रकाश का अपार स्रोत है उसके कारण ही मानव को भी स्पष्ट किसी चीज की समझ आती है क्योंकि सूर्य की रोशनी में दिखाई पड़ता है इसी प्रकार हमको भी बाबा ने ज्ञानसूर्य बनाया है जिससे कि हर चीज की यथार्थ जानकारी मिल गयी पर जानने के बाद न मानना अर्थात जानकारी नहीं तो अब कोई अल्पज्ञता व अलबेलाई के कर्म न हो व दूसरों को भी श्रेष्ठ कर्मों की व परमात्मा पिता के सम्बन्ध व घर व राज्य का रास्ता प्रकाशित हो।

2- किचड़े व कीड़ों को भस्म करना।

अगर सूर्य किचड़े को न भस्म करे तो पता नहीं कितनी बीमारियां हो जायें। जैसे लायक धरती न रहे अगर धूप में खोल न के रखा हो तो, इसी प्रकार अनावश्यक जानकारी भी व्यर्थ का किचड़ा ही है जिससे हमारा Memory Bank भरा रहता है फिर और आवश्यक का ज्ञान भी दिमाग के अन्दर जाती नहीं। दूसरा कोई भी संशय का कीड़ा

अगर गया तो महामारी की तरह फैलेगा इसलिए ज्ञान ज्ञान सूर्य बन हर शंका का समाधान न सिर्फ अपना पर किसी का भी कर देना है।

3- ऊर्जा -

सूर्य की ऊर्जा न सिर्फ शरीर को बल्कि कितने और काम आज Solar system के द्वारा हो रहे हैं। इसी प्रकार Subconsious mind की ऊर्जा को भी पूरा Use करना है।

4- बादल छिपा नहीं सकते।

कितने भी काले बादल हों पर सूर्य को छिपा नहीं सकते, इसी प्रकार कितने भी विघ्न व परिस्थितियों के काले बादल आएं पर सत्य का सूर्य कभी छिपे नहीं अर्थात कभी झूठ का सहारा नहीं लेना चाहिए, चाहे कुछ भी हो।

11- सीजन का फल.

सस्ता
स्वास्थ्य वर्धक
सहज सुलभ
Variety

1- मौसमी फल सदैव सस्ता होता है इसलिए हरेक अमीर गरीब सब खा सकते हैं इसी प्रकार से ज्ञान बाबा free देते जो सब ले सकते हैं तो हमें भी सबके लिए सहज ही उपलब्ध होना चाहिए, कोई चाल ऐसी हमारी न हो जो लोगों को अभिमान दिखे और हमसे कोई फायदा न ले पायें, जो है लाभदायक

भी सती दादी जैसे सभी दादी थी उनकी कोई भी डिमाण्ड नहीं हुआ करती थी कोई भी उनको अलग से सुविधा-साधन नहीं चाहिए था। सबके लिए सदा उपलब्ध कोई भी कभी भी किसी भी गांव में बुलाना दादी सदा तैयार

2- स्वास्थ्य वर्धक -

गर्मी में शरीर को जैसा चाहिए तो प्रकृति वही फल देती है वही सब्जियां होती हैं तो इसी प्रकार बाबा जब जो जिस समय व दिन कहते हैं तो हम उस दिन ही करते हैं आज्ञाकारी बनने के साथ समर्थ भी बनते हैं क्योंकि बाबा ने एक बार कहा था कि कहने के समय शक्ति भी देते हैं।

3- सहज-सुलभ-

मौसम होने के कारण हर जगह सहज ही मिल जाता है इसलिए अगर तीव्र पुरुषार्थ करें। तो प्रकृति का Science एवं परिस्थितियों का भी सहयोग है संबंधों का भी सहयोग क्योंकि सबको परख कर देख लिया कि कोई भी सुखदाई नहीं है।

4- Variety -

मौसम होने के कारण फल या सब्जी अनेक Variety उपलब्ध होती है इसलिए नवसृष्टि का सृजन हो रहा है जो भी पद चाहिए सब खाली हैं सिर्फ दो के अलावा इसलिए मन मर्जी चयन और श्रेष्ठतम पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिए।

12- हिरन-

आँखें

चाल
कस्तूरी
आकर्षण+सुन्दर

1- आँखें -

हिरन की आंखें सुन्दर होती हैं, बाबा ने हमारी आंखों में भी सुन्दरता का उजाला भर दिया है अगर हमारी नजर गुणों पर जाती है तो सबको सुन्दर लगेगी, दूसरा रूहानी प्रेम भी बरसाने के निमित्त आंखें सुन्दर बन सकती हैं तो और ही कृपा-दृष्टि से सुन्दर बनायें।

2- कस्तूरी-

हिरन के नाभि में कस्तूरी रहती हैं बाबा ने हमें स्वदर्शन-चक्र देकर और मा० ज्ञानसागर का Title देकर हमारे में अनेक गुणों की खुशबू से संपन्न बना दिया है अभी बाहर भटकना क्या? बाबा की याद कस्तूरी समान सहज सब खूबियों से संपन्न कर देगी।

3- चाल-

हिरन की चाल बहुत तीव्र होती हैं। जल्दी उसको पकड़ना मुश्किल है, इसप्रकार हमारी भी पुरुषार्थ की चाल इतनी तीव्र और श्रेष्ठ हो कि माया भी पीछा न कर पाये, मन की चाल को थोड़ा रोककर ज्ञान व वैराग्य के पहियों द्वारा पुरुषार्थ की गाड़ी की चाल को गति प्रदान करना है चाहिए।

4- आकर्षण-

हिरन की सुन्दरता सबको आकर्षित करती है इसी प्रकार हमारा अन्तर इतना सुन्दर हो कि मन

मोहन भले न हो पर उनका मन मुदित तो हो जाये। जीवन में इतना आकर्षण हो कि सब ये पूंछने लगें कि तुम्हें किसने पढ़ाया? तुम किसके बच्चे हो? तुम्हें ऐसा किसने बनाया?

13- दीपक- सूर्य का प्रति निधि
अन्धकार को मिटाना
निर्भय

1- सूर्य का प्रति निधि- जिस प्रकार अस्त हो रहे सूर्य को दीपक कहता है कि आप निश्चिन्त होकर जाइये आपके जाने के बाद आपका कार्य हम करेंगे। उसी प्रकार हम चैतन्य दीपकों को भी ज्ञान सूर्य का प्रति निधि बनकर यही कहना चाहिए कि आप निश्चित रहें कि जब तक संसार के आखिरी व्यक्ति तक संदेश नहीं पहुंचा तब तक आराम नहीं, जब तक आपका राज्य नहीं तब तक मैं अनवरत सेवा में तत्पर रहूंगा।

2- अन्धकार को मिटाना - जिस प्रकार घनघोर अंधेरे में भी एक छोटा सा दीपक भी प्रकाश ले ही आता है विचलित न होकर अपने काम को अन्जाम देता है उसी प्रकार 2500 वर्ष से हर सत्ता पर माया रावण का वर्चस्व होने के बाद भी हम भी कोई डर नहीं साथ सर्वशक्तिमान है। अपने कर्तव्य को करते ही रहना चाहिए।

3- निर्भय - दीपक न कभी घटाटोप अंधेरे से डरता है न ही हवाओं से, वह बस अपने ही कार्य पर ध्यान लगाता है अंधेरे से तो कोई डरने का सवाल ही नहीं पर हवाओं से भी निडर हो लड़ता है इसी प्रकार अज्ञानता की बार ही छोटी विघ्नों से भी डरने की बात नहीं बाबा कितनी बार कह चुके हैं कि माया Paper Tiger है तो माया या व्यक्ति से घबराने की क्या बात है? जीत हमारी हो गई थी अभी भी होनी ही है।

15- तोते - समझ नहीं
बोलना सीख लेता है
ज्यादा दिन पिंजड़े में रहने के कारण पंख के बावजूद भी उड़ नहीं पाता
कैदी भी कुछ दिन में निकल आते हैं।

1- समझ नहीं —
तोते को कहा जायेगा गंगा राम नल पर नहीं बैठना, कहता रहेगा पर बैठा भी रहेगा, शिकारी के जाल में फंसा भी रहेगा और कहता भी रहेगा कि जाल में नहीं फंसेंगे, इसी प्रकार कई बातों को कहते भी रहेंगे और करते भी रहेंगे, जैसे क्रोध नहीं करना चाहिए, चिन्तन 8100 होना चाहिए कर्म या परचिन्तन नहीं पर करते भी रहेंगे तो इस प्रकार के तोते नहीं बनना है।

2- हर बात बोलना जल्दी सीख लेता है —
जैसे परिवेश में तोता रहता है वहां ~~की~~ लोगों की भाषा बड़ी आसानी से सीख लेता है। इसी प्रकार अतीत में हमने सिर्फ जाप किया था रटा था कई बार यहाँ भी रटा-रटाया ज्ञान लेकर चलते रहते हैं स्वरूप में जरा भी नहीं या फिर हर किसी के प्रभाव में आकर बोलना सीख लेते हैं पर शान्त रहकर परिस्थिति का सामना ~~करे~~ रह सका नहीं है।

3- पिंजड़े के कारण पंख होते भी उड़ नहीं पाता —
2500 वर्ष से देह रूपी पिंजड़े में रहने के कारण आत्मा उड़ने वाली होकर भी उड़ नहीं पाती, इसी प्रकार जहां रहते हैं वहाँ ही एक हद का दायरा बना लेते 24 घंटे 365 दिन बस वहीं चिन्तन बस मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक इसके आगे भी

बाबा ने अनुरुद्ध बेहद का दिया है पर नहीं तो ऐसे तोते नहीं बनना है।

4- कंठी निकल आती है —

कंठी निकल आने पर उसकी सुन्दरता बढ़ जाती है, इसी प्रकार कई लोग कुछ वर्ष ज्ञान में चलने के कारण बहुत सारे ज्ञान की बातों को कण्ठ कर लेता है जिससे वह लोगों को आकर्षित करने लगता है लेकिन जैसे वह कण्ठी वाला तोता सिर्फ बाहर से सुन्दर दिखता है पर अन्दर से तो वह वैसा ही होता है इसी प्रकार सिर्फ कंठ किया व्यक्ति अन्दर वैसा ही खाली होता है हमें खाली नहीं स्वरूप में लेकर भरपूर बनना है सिर्फ कण्ठवाला ज्ञानी नहीं बनना है।

15- संदेशी-

आज्ञाकारी
पत्रकार - दूसरी दुनिया के कहानी
वफादार
Full control

1- आज्ञाकारी - एक बार चक्रधारी दीदी क्लास में बता रही थी कि पहले कई माताएँ भी ध्यान में जाती थी पर बिना सेन्टर इंचार्ज की अनुमति के बिना नहीं जा सकती थी, बिना आज्ञा प्रसाद भी नहीं। ऐसे हमें भी बाबा के या बड़ों या निमित्त के आज्ञाकारी ~~[illegible]~~ बनना है, अगर हमारी Duty 2नं. गेट पर लगाई है तो वह आंख बंद करके कहें कि आप निश्चिन्त होकर जाएं वह वहां ही होंगे। बाबा भी हमें अधिकार से आज्ञा दे सकें।

2- दूसरी दुनिया के कहानी पत्रकार - सूक्ष्म लोक का

समाचार इशारों की भाषा समझना ये बड़ी बात है इसी प्रकार हमको कम से कम वाणी का उपयोग करना पड़े या हमारे लिए लोगों को भी कम आवाज़ का Use करना पड़े, बाबा को भी हमारे को बार-2 न कहना पड़े हम इशारों में ही समझ कर चलें। हम इस दुनिया में रहते भी सूक्ष्म वतन की अनुभूति करें व करायें।

3- वफ़ादार –

एक बार Meditation Hall में दादी गुलज़ार वतन का अनुभव अष्ट रतन का सुना रही थी तो बड़ी दादी ने पूछा कौन-2 हैं तो दादी गुलज़ार ने कहा आप हैं पर औरों के लिए बाबा ने मना किया है, बड़ी दादी ने बहुत बार बहुत तरीके से पूछा लेकिन दादी गुलज़ार ने बताया नहीं सेना की वफ़ादारी भी ज़रूरी होती है इसी प्रकार रूहानी सेना व हम संदेश वाहकों को भी बाबा के प्रति यज्ञ के प्रति बड़ों के प्रति व स्वयं के प्रति भी वफ़ादार रहना ही होगा। नहीं तो बेवफ़ाई की कीमत तो चुकानी पड़ेगी ही पर हम प्रभु प्रेम में वफ़ादार रहें।

4- full control –

त्रिमूर्ति बाप से जब ज्ञानामृत निकलती थी उसमें एक बार हमने पढ़ा था कि दादी गुलज़ार ध्यान में कैसे जाती हैं वह बताया था, कि शरीर से पूरा डिटैच होना पड़ता है एक दम अशरीरी फिर चलें मन-बुद्धि से बाबा के पास, इसी प्रकार हमें भी मेरा हर कर्मेन्द्रिय पर पूरा control हो, हम प्रभु पैगम्बर हैं हमें कितना सचेत रहना होगा, कितना जागृत रहना हो कोई कर्मेन्द्रिय धोखा न दे

16 – कमल – निर्लिप्त
परिवार के साथ
देवों पर समर्पित
राष्ट्रीय पुष्प

1- निर्लिप्त –

कमल कीचड़ व पानी में रहता है पर पानी व कीचड़ की एक बूंद भी Observe नहीं करता, अपनी Purity को सदा कायम रखता है अगर तल में एक मीटर पानी बढ़ जाये तो वह भी अपनी लम्बाई बढ़ा लेता है, इसीप्रकार हम जहाँ भी रहते, जिनके बीच में रहते हैं तो उनके प्रभाव से प्रभावित न होकर अपने संस्कारों का ही प्रभाव डालना चाहिए। हमारी अपनी दिनचर्या अपनी मर्यादा व सिद्धान्त हैं

2- परिवार के साथ – बाबा ने हमें सन्यासी या निवृतिमार्गी नहीं बनाया, अगर लौकिक की जिम्मेवारी नहीं तो यज्ञ में समर्पित है तो यहां तो बड़ा परिवार हो जाता है या किसी को लौकिक में भी रहना है पर अपने Role को कभी भी न भूले, परिवार के सदस्य कोई कुछ भी बोलें या अपना Role अच्छा करें न करें पर हमें अपने Role को अच्छे से अच्छा करना चाहिए।

3- देवों पर समर्पित –

कई अवसरों पर कमल का फूल ही देवताओं के चरणों पर अर्पित किया जाता है या सरस्वती व लक्ष्मी का आसन भी बनता है, इसीप्रकार हमें भी अपने जीवन को इतना Pure बनाना चाहिए कि सरस्वती व लक्ष्मी विराजमान हो जायें। हमें कोई भी दैहिक या कलियुगी संस्कार या संकल्प छू भी न पाये अर्थात

हर Act में दिखता हो झलके। जिसके मन पर कन्ट्रोल हो जाये अर्थात श्रेष्ठतम स्थिति हो।

4- राष्ट्रीय पुष्प —

राष्ट्रीय पुष्प देश की शान बना क्योंकि कीचड़ में रहने के बावजूद भी पवित्र माना गया है। इस कारण इतने पुष्पों में भी अपनी अलग पहचान बनाई, इसी प्रकार हम अपनी जीवन ऐसी Valuable बनायें कि बाबा को भी गर्व हो और जिसको जिस गुण की जरूरत हो तो बाबा कहे कि इस Value को अनुभव प्राप्त करने के लिए मेरे इस बच्चे के पास जायें। यह हम भारत का गर्व करे।

17- सांप -

बिना पैर के चलता है
जहर उगलता है
बीन पर डांस
बाहर से ठंडा

1- बिना पैर के चलता है —

सांप बिना पैरों के चलता है. इसी प्रकार हमको भी मन की आज्ञा पर सदा तत्पर रहना चाहिए, और दूसरा पुरुषार्थ में कभी थकना नहीं पैरों से चलने पर थकावट होती है। उमंग -उत्साह के पैरों से चलो, अथक होकर चलें।

2- जहर उगलता है —

ऐसा जहर उगलता है कि व्यक्ति सोता है और कभी-2 हमेशा के लिए सो जाता है। हम कभी किसी को ऐसा जहर (comment) न उगले कि

सामने वाला अपने सत्य व सात्विकता में खो जाये या हमेशा के लिए अज्ञान की नींद में सोने चला जाये। हाँ नील कण्ठ के सामने ही अपने बुराइयों को सदा के लिए उगल दें।

3- बीन पर डांस -

सपेरे की बीन पर हर सांप नाचने लगता है, बाबा की मुरली भी बीन की तरह ही मस्त कर मन की डांस होने लगे तो अन्दर कितना जहर हो पर मुरली की तान पर हम मतवाले हो तो बाकी सारी दुनिया भूल सकते हैं और उनके लिए सरल बन सकते हैं।

4- बाहर से चन्दन ठंडा -

~~है~~ बाहर से चन्दन ठंडा होता है पर अन्दर जहर ऐसा भरा कि ~~जिससे~~ सांप को देख कर ही कई लोगों को पसीना आने लगता है। तो हमें पुरुषार्थ में कभी ठंडा नहीं होने चाहिए, हाँ हमारे लिए जो गायन है कि योगी के जिनके शीतल अंग तो हमारा आन्तरिक भी ठंडा हो, बाहर से भी शीतल।

12- शंकर-

अशरीरी
ध्यान मग्न
तांडव नृत्य

1- अशरीरी -

शंकर को हमेशा अशरीरी, बिना वस्त्रों के ही दिखाया जाता है, हमें भी हमेशा शरीर वस्त्र से अलग अशरीरी अनुभूति में ही रहना चाहिए, जिससे

विषम परिस्थिति भी दुखी न करे अर्थात समर्थ Stage निर्भय, निर्वैर स्थिति।

2- ध्यान मग्न —

शंकर की एक तपस्वी की तरह हमेशा ध्यान मग्न अपने इष्ट के ध्यान में लीन. ~~[illegible]~~ हमें भी एक प्रभु प्रेम में अगर तल्लीन रहेंगे तो बाकी सारी दुनिया की बातों को सुनते, बचे रह सकते हैं, एक की लगन, एक से मगन, सदा की तपस्या।

3- तांडव नृत्य —

तांडव नृत्य के समय कुछ विनाश होता है रौद्र रूप है, हमें रुद्र रूप रख अपनी तमोप्रधानता का विनाश करके ही शान्त होना होगा।

ओमशान्ति